हरिभूमि
हिसार भूमि
रोहतक, शुक्रवार, 21 मार्च 2025

तापमान
अधिकतम 34 .2 डिग्री
न्यूनतम 17 .1 डिग्री

12 सम्मेलन में उठाए जाएंगे युवाओं से जुड़े मुद्दे : जितेन्द्र

12 समस्याओं को लेकर एसएफआई ने सौंपा ज्ञापन

खबर संक्षेप

ट्राली और हैरो चोरी के मामले में दो गिरफ्तार

हिसार। पुलिस की एबीवीटी टीम ने गांव भगाना से ट्रैक्टर ट्राली और हैरो चोरी के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनमें गांव के ही महावीर व रवि शामिल है। पुलिस ने आरोपियों से वारदात में प्रयुक्त ट्रैक्टर और चोरीशुदा हैरो बरामद कर लिया है। पुलिस रिकॉर्ड के मुताबिक आरोपी पहले भी आपराधिक वारदातों में शामिल रहे हैं। आरोपी महावीर पर लड़ाई झगड़े और आर्म्स एक्ट सहित तीन और रवि पर लड़ाई झगड़े का एक केस दर्ज है। आरोपियों को अदालत में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

गाय चोरी के मामले में तीन आरोपी गिरफ्तार

हिसार। एचटीएम थाना पुलिस ने नई सब्जी मंडी से गाय चोरी मामले में तीन और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनकी पहचान हरिता निवासी सुनील कुमार और कृष्ण व भैरी निवासी संदीप के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपियों से दो गाय और वारदात में प्रयुक्त गाड़ी बरामद की है। ढाणी श्याम लाल निवासी रोहित ने नई सब्जी मंडी से 11 मार्च को दो गाय चोरी होने के बारे में शिकायत दी थी। इस मामले में पहले दो आरोपियों मनोज उर्फ वासु और मनदीप उर्फ धोली को गिरफ्तार किया जा चुका है। मामले में पुलिस ने कुल पांच आरोपियों की गिरफ्तारी की है। पकड़े गए तीनों आरोपियों को पूछताछ के बाद अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

सेवा संघ का प्रांतीय अधिवेशन 23 को

हिसार। अखिल भारतीय सेवा संघ का प्रांतीय अधिवेशन 23 मार्च को हिसार में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता

विनोद धवन

प्रदेश अध्यक्ष इन्द्र ग़ोयल करेंगे जबकि हिसार की विधायक सावित्री जिंदल व मेयर प्रवीण पोपली मुख्य अतिथि होंगे। अखिल भारतीय सेवा संघ के प्रदेश महासचिव विनोद धवन ने बताया कि अधिवेशन में हरियाणा के विभिन्न जिलों से पदाधिकारी भाग लेंगे तथा सेवा संघ के सेवा प्रोजेक्ट्स पर चर्चा करेंगे। इसके अलावा विभिन्न शहरों की टीमों के पदाधिकारियों को दायित्व की शपथ भी करवाई जाएगी। इस दौरान हरियाणा प्रांत की नई टीम का गठन भी किया जाएगा तथा सेवा संघ के संविधान संशोधन और विस्तार पर चर्चा की जाएगी। धवन ने बताया कि सेवा संघ का ये ऐतिहासिक अधिवेशन होगा।

अवैध पिस्तौल सप्लाई करने का आरोपी काबू

हांसी। बास थाना पुलिस ने अवैध हथियार सप्लाई करने वाले एक आरोपी मिर्चपुर निवासी अंकित को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार आरोपी अंकित ने गत दिनो गांव शेखपुरा व ढ़ाणी पुरिया में फायरिंग करने वाले आरोपी रवि व इन्द्र को तीन अवैध पिस्तौल सप्लाई किए थे। थाना बास पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश करके न्यायालय के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

अग्निपथ योजना में आवेदन 10 तक मांगे

हिसार। अग्निपथ योजना वर्ष 2025-26 के तहत ऑनलाइन आवेदन किए जा रहे हैं। ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 10 अप्रैल निर्धारित की गई है। सेना भर्ती कार्यालय के भर्ती निदेशक ने बताया कि अग्निपथ योजना के तहत हिसार, फतेहाबाद, सिरसा और जींद जिले के युवा आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि इस वर्ष 2 अग्निवीर श्रेणी में आवेदन करने का विकल्प दिया गया है। इच्छुक उम्मीदवार उनकी योग्यता के अनुसार 2 अग्निवीर श्रेणी के लिए आवेदन कर सकते हैं। अग्निवीर श्रेणी में प्राथमिकता विकल्प है।

राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य ममता कुमारी ने किया जेल का निरीक्षण

सेंट्रल जेल-टू में खानपान की व्यवस्था बढ़िया मगर शौचालय ठीक नहीं मिले

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य ममता कुमारी ने लघु सचिवालय परिसर स्थित वन स्टॉप सेंटर, आजाद नगर स्थित केंद्रीय कारागार-टू तथा हांसी में कुंभा गांव के आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण कर सुविधाओं का जायजा लिया।

इस दौरान कुछ स्थानों पर आयोग की कमियों दिखाई दी, जिस पर उन्होंने उनके समाधान के निर्देश दिए। इस अवसर पर उनके साथ हरियाणा महिला आयोग की चेयरपर्सन रेनू भाटिया व अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

- सुविधाओं का लिया जायजा
- दूध व्यवस्था की तारीफ की

केंद्रीय कारागार-2 में बंद महिला हवालातियों तथा कैदियों की दिनचर्या को देखा। उसमें कहीं कोई कमी नजर नहीं आई। खान-पान, स्कूली व्यवस्था सब कुछ बढ़िया है, लेकिन बिलड़िंग काफी पुरानी है, जर्जर हालत में है। शौचालय में थोड़ी असुविधाएं है। उसके लिए स्थानीय जेल प्रशासन को उचित दिशानिर्देश दिए हैं। इस दौरान उन्होंने महिला बंदियों को आयुष्मान कार्ड भी चैक किए, जिन के आयुष्मान कार्ड नहीं है, उनके कार्ड बनाने के आदेश दिए। राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य ममता कुमारी जेल में महिलाओं दूध व सीजनल फ्रूट की व्यवस्था से काफी खुशी नजर आई। उन्होंने बताया कि महिला बंदियों के लिए जेल प्रशासन की तरफ से रोजाना 250 ग्राम दूध उपलब्ध करवाया जा रहा। इसके साथ ही उन्हें सीजनल फ्रूट दिए जाते हैं। महिला बंदियां के चेहरे देखकर ऐसा लगा, उनके लिए अच्छी व्यवस्था की गई है।

हिसार। वन स्टॉप सेंटर का निरीक्षण करती राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य ममता कुमारी तथा महिला एवं बाल विकास की चेयरपर्सन रेनू भाटिया।

डबल चार्ज की समस्या

आयोग की टीम ने वन स्टाप सेंटर का निरीक्षण किया और वहां पर उन्होंने प्रधानमंत्री की गाइडलाइन के अनुसार व्यवस्थाओं को चैक किया। दौरे के दौरान पता चला कि अधिकारियों पर डबल चार्ज होने के कारण वे वन स्टाफ सेंटर की प्रोपर देखरेख नहीं कर पा रहे हैं। आयोग इस बारे में अपनी रिपोर्ट बनाकर विभाग को भेजेगा, ताकि वन स्टाफ सेंटर में सभी व्यवस्थाएं सुधार हो सके। स्टाफ कमी को लेकर भी जरूरी निर्देश जारी किए जाएंगे। अगले 15 दिन में स्टाफ की कमी नहीं रहेगी।

वृद्धों ने सुनाए भजन

आयोग की टीम ने मोक्ष वृद्ध आश्रम का भी दौरा किया।टीम वहां की व्यवस्थाओं से काफी प्रभावित नजर आई। राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य ममता कुमारी ने बताया कि आश्रम में हरियाणा ही नहीं देश के दूसरे राज्यों से भी वृद्ध आश्रम में रह रहे हैं। वहां पर वृद्धों ने आयोग को भजन-गाने सुनाए। आश्रम का माहौल की जितनी तारीफ की जाए, उतनी कम है। संचालकों को वहां रहने वाले वृद्धों के आयुष्मान कार्ड तथा बुढ़ापा पेंशन बनाने की बात कही है।

महिलाओं में जागरूकता के कारण देश में घरेलू हिंसा के मामले घटे

हिसार। राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य ममता कुमारी ने कहा कि पहले के मुकाबले वर्तमान में महिलाओं में जागरूकता आई है। इस कारण देश में घरेलू हिंसा के मामले घटे हैं। अब महिलाओं को प्रताड़ित नहीं कर सकते। दहेज के मामले अब कम होने लगे हैं। दहेज के खिलाफ एक्ट तो पहले ही बना गया था, लेकिन महिलाएं शिक्षित, संबल हो रही है। नौकरी पर जा रही है, कई उच्च पदों तक महिलाएं पहुंची है। खेल व फौज में भी महिलाएं तेजी से आगे बढ़ रही है। इस नाते महिलाओं के प्रति हिंसा तो घटेगी ही। राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य ममता कुमारी अपने तीन दिवसीय दौरे के दौरान पत्रकारों से बातचीत कर रही थीं। ममता कुमारी ने बताया कि राष्ट्रीय महिला आयोग के पास जितनी शिकायतें आती हैं, उनमें से 50 फीसद शिकायतें घरेलू हिंसा से जुड़ी होती हैं। इसमें महिला का शोषण करना, दहेज के लिए प्रताड़ित करना, लड़का नहीं होने पर तंग करना, घर से निकाल देना जैसे केस ज्यादा होते हैं। उन्होंने कहा कि एकल परिवारों के कारण परिवार बिखर रहे हैं। एकल परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार ज्यादा बेहतर है। संयुक्त परिवार को देखकर हमें बहुत कुछ देखने का मिलता था चाहे जीने तरीका हो, चाहे बात करने का, चाहे सुख-दुख में भागीदारी निभाने का मामला है। संयुक्त परिवार में जब किसी सदस्य पर कोई विपत्ति आ जाती थी तो परिवार के बड़े बुजुर्ग लोग उसे संभाल लेते थे, लेकिन आज एकल परिवार के कारण परिवार बिखरता है। संवेदनाएं शून्य हो रही है। वह सब एकल परिवार के कारण हो रहा है।

ममता कुमारी

- एकल की तुलना में संयुक्त परिवार ज्यादा बेहतर : ममता कुमारी

समाज को संवेदनशील होना होगा

राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्य ममता कुमारी ने कहा कि समाज को संवेदनशील होना होगा। समाज जब संवेदनशील होगा, तो कानून की भी रक्षा होगी। कितना भी कानून बना लें, लेकिन समाज को ही संवेदनशील होकर न्याय दिलाने का काम करना है। महिलाओं को इसके लिए अपनी शिक्षा के स्तर में सुधार करना होगा और सशक्त होना होगा। जब तक महिलाएं जागरूक नहीं होंगी, अपने अधिकारों को समझेगी नहीं तब तक वे अपना अधिकार प्राप्त नहीं कर सकती।

छाजूराम जाट कॉलेज व सिटी कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन के बीच हुआ एमओयू

हिसार। छाजूराम जाट कॉलेज एवं सिटी कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन आर्य नगर के बीच शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस समझौते का उद्देश्य छात्राओं के लिए नए अवसर सृजित करना, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना और व्यवहारिक ज्ञान व कौशल विकास को बढ़ावा देना है।

इस समझौते के तहत, दोनों संस्थान संयुक्त रूप से कार्यशालाओं, सेमिनारों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे, जिससे छात्राओं को उद्योग और व्यवसाय की नवीनतम आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया जा सके। इसके अलावा शिक्षकों के लिए भी विशेष प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाएंगे जिससे वे आधुनिक शिक्षण विधियों एवं शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए किए हस्ताक्षर। छाजूराम जाट कॉलेज के प्राचार्य डॉ. कपेन्द्र सिंह, डॉ. महेश ख्यालिया, सिटी कॉलेज से निदेशक एडवोकेट महाबीर पूनिया ने एमओयू पर हस्ताक्षर करते हुए आदान प्रदान किया। दोनों संस्थानों के अधिकारियों ने बताया कि एनईपी 2020 के तहत छात्र अध्यापकों मे एकीकृत तरीके से व्यावसायिक श्रम के साथ विषयगत ज्ञान प्रदान के करने के उद्देश्य के साथ सिटी कालेज आफ एजुकेशन आर्य नगर व शहर के प्राचीन एवं प्रतिष्ठित छाजूराम जाट कॉलेज के बीच सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए गए।

- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना उद्देश्य

हिसार। एमओयू के मौके पर मौजूद अधिकारी।

रोहतक से इलाज करवाने आई महिला से दुष्कर्म

- वीडियो वायरल करने की धमकी देकर पैसे भी खाते में डलवाए
- शिकायत करने पर आरोपी के परिजनों ने धमकाकर भगाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

रोहतक के डोभ गांव से हिसार में इलाज करवाने आई महिला के साथ दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। लगभग अढाई वर्ष पुराने इस मामले में अश्लील फोटो व वीडियो बनाने व जान से मारने की धमकी देने का भी आरोप है। महिला के अनुसार जब वह आरोपी के गांव भगाना में उसकी शिकायत करने गई तो उसके मां, बाप व पत्नी ने उसे जान से मार देने की धमकी देकर भगा दिया।

इस संबंध में अर्बन एस्टेट थाना में दी शिकायत में रोहतक जिले के डोभ गांव की महिला ने कहा है कि वह 3 अक्टूबर 2023 को अपनी आंखो का इलाज करवाने के लिए हिसार आई थी। वहां पर उसे भगाना गांव निवासी युवक राहुल मिला, जो पहले ही इलाज के लिए अस्पताल में आया हुआ था। उसने इलाज बारे उससे बातचीत की और फिर उसका नंबर लेकर बातचीत करनी शुरू कर दी। बार-बार मना करने के बाद भी वह पीछे पडा रहा और कहता रहा कि केवल दोस्ती कर लो। फिर उसने लगातार बातचीत जारी रखते हुए 4 दिसंबर 2024 से 7 मार्च 2025 को मिलने के लिए उसे हिसार बुलाया। बातचीत के बाद राहुल ने उसे कहा कि कुछ देर आराम कर लेते हैं। वह उसे हिसार के एक होटल में ले गया। वहां जाने के बाद राहुल ने अपने बैग से एक आधी पी हुई कोका कोला की बोतल उसे पीने के लिए दी। यह पीने के बाद उसे नशा होने लगा और वह बेसुध हो गई। जब होश आया तो उसके शरीर पर कोई कपडा नहीं था और राहुल ने उसकी मर्जी के बिना दुष्कर्म किया। आरोपी ने उसकी अश्लील वीडियो भी बना ली।

जब उसने राहुल से इसका विरोध जताया तो उसने कहा कि वह तो ऐसे ही करेगा। अगर भविष्य में कोई बात नहीं मानी तो में अश्लील वीडियो तुम्हारे परिवार वालों तथा इंटरनेट पर वायरल कर दूंगा और तुम्हे बदनाम कर दूंगा। इसके बाद वह अलग-अलग स्थानो पर जबरदस्ती ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म करता रहा ओर जान से मारने की धमकी भी देता रहा। हाल ही में 12 मार्च को राहुल उसे सालासर के पास किसी होटल में लेकर गया और कोई नशीला पदार्थ पिलाकर फिर से गलत काम किया। जब उसकी तबीयत ज्यादा खराब हो गई तो राहुल उसे किसी अस्पताल में ले गया और इलाज करवाया।

पुलिस में केस दर्ज

आरोप है कि राहुल उसकी अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी देकर अलग-अलग नंबर पर दबाव देकर पैसे डलवाता था जिनके स्क्रीनशॉट उसके पास है। जब वह राहुल से ज्यादा परेशान हो गई तो वह उसकी शिकायत करने उसके गाव भगाना गई और सारी बाते उसके परिवार वालों को बताई। इस पर उसके मां, पिताजी व राहुल की पत्नी ने उससे कहा कि राहुल की कोई गलती नहीं है, सारी गलती तेरी है। आज के बाद अगर हमारे घर आई तो जान से मार देंगे। उसने राहुल व उसके परिजनों पर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है लेकिन अभी तक गिरफ्तारी नहीं हो पाई है।

बिना नक्शे चल रहा निर्माण कार्य सील

हिसार। बिना नक्शे के निर्माण को लेकर नगर निगम ने न्यू ऋषि नगर जगजीवन नगर में चल रहे निर्माण पर कार्रवाई करते हुए सील किया। जेई मंदीप ने बताया कि इसकी शिकायत मिली थी जिसको लेकर भवन स्वामी को नोटिस जारी किया गया था।

इसका जवाब सात दिन में देना था। परन्तु भवन मालिक द्वारा समय अवधि के दौरान जवाब न देने पर नगर निगम की टीम ने गुरुवार को कार्रवाई करते हुए भूमितल पर अवैध निर्माण को सील कर दिया। उन्होंने बताया कि यह कार्रवाई निगमायुक्त नीरज के आदेशानुसार की गई हैं। टीम में जेई विकास पूनिया, जेई मनजीत हुड्डा, सोनू व सुनील मौजूद रहे।

हिसार। निर्माण कार्य को सील करती निगम की टीम।

चोरी की चार मोटरसाइकिल समेत दो गिरफ्तार, कारावास में भेजे

हिसार। सीआईए टीम व अनाज मंडी चौकी पुलिस ने सेक्टर 14 स्थित निजी अस्पताल के सामने से मोटरसाइकिल चोरी के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनकी पहचान लुदास निवासी रिंकू उर्फ टिंकू और स्याहड़वा निवासी हिमांशु के रूप में हुई। पुलिस ने आरोपियों से चोरीशुदा मोटरसाइकिल सहित कुल चार मोटरसाइकिल बरामद की है।

गांव पीरावाली निवासी सुखविंदर ने बताया कि उसकी माता उक्त अस्पताल में दाखिल थी। वह उनसे मिलने गया और मोटरसाइकिल अस्पताल के आगे खड़ा किया था। कुछ समय बाद जब वापस आया तो मोटरसाइकिल वहां नहीं मिला। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

शिविर में 92 लोगों के स्वास्थ्य की जांच

हिसार। छाजूराम मैमोरियल जाट कॉलेज में शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में हेल्थ चेकअप शिविर का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ. कपेन्द्र सिंह ने शहीद भगत सिंह, राजगुरु तथा सुखदेव की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर शिविर का आगाज किया।

महाविद्यालय के एनएसएस अधिकारी डॉ कृष्ण लाल ने बताया कि शिविर में 92 लोगों की स्वास्थ्य जांच की गई जिसमें मधुमेह, थायराइड, कोलेस्ट्रॉल, सीरम क्रिएटिनिन, यूरिक एसिड जैसे टेस्ट शामिल रहे। दोपहर के सत्र में कैंसर जागरूकता विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें आधार हॉस्पिटल हिसार से प्रसिद्ध सर्जन डॉ. हरीश कुमार मुख्य वक्ता रहे। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुनील कुमार, डॉ. नेहा डांगी तथा डॉ. राजपाल सिंह भी मौजूद रहे।

- छाजूराम मेमोरियल जाट कॉलेज में शिविर संपन्न

'नो पार्किंग जोन' में कार खड़ी करने पर काटा 7500 रुपये का चालान

एसडीएम से दुर्व्यवहार करना युवक को पड़ा भारी

- सड़क पर गाड़ी के फोटो खींचने पर एसडीएम से भिड़ा था युवक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

एसडीएम राजेश खोथ ने बृहस्पतिवार सुबह प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बाजार में अतिक्रमण हटवाने तथा सफाई व्यवस्था का जायजा लेने के लिए निकले। भ्रमण के दौरान एसडीएम राजेश खोथ जब भगत सिंह मार्केट में पहुंचे तो वहां उन्हें सड़क के बीचोंबीच एक स्कार्पियो गाड़ी खड़ी दिखाई थी। जिसके चलते बाजार में जाम की स्थिति बनी हुई थी।

एसडीएम खोथ ने अपनी गाड़ी रुकवाई और अपने मोबाइल फोन से सड़क के बीच खड़ी स्कार्पियो गाड़ी के फोटो लेने लगे तो इस दौरान गाड़ी लेकर बाजार आए युवक की गाड़ी के फोटो ले रहे एसडीएम राजेश खोथ पर नजर पड़ी तो वह तुरंत दुकान से गाड़ी के पास पहुंचा और गाड़ी के फोटो ले रहे एसडीएम राजेश खोथ से भिड़ गया। एसडीएम राजेश खोथ से गाड़ी के खड़ी फोटो खींचने की वजह पूछने के साथ उनसे बहस करने लगा तथा एसडीएम से कहा कि आपकी हिम्मत कैसे हुई मेरी गाड़ी के फोटो खींचने की। इस पर एसडीएम राजेश खोथ ने युवक को नो पार्किंग जोन तथा सड़क पर गाड़ी नहीं करने बारे समझाने का प्रयास किया तो वह उनसे फिर उलझ गया। इसके बाद एसडीएम खोथ ने फोन कर ट्रैफिक पुलिस इंचार्ज को मौके पर बुलाया और सड़क के मध्य खड़ी गाड़ी का चालान करने के आदेश दिए। युवक को जब यह पता चला कि गाड़ी का फोटो खिंचने वाला व्यक्ति हांसी एसडीएम है तो उसका सारा घमंड उतर गया और एसडीएम से माफी मांगने लगा। लेकिन ट्रैफिक पुलिस एसडीएम राजेश खोथ से मिले आदेश के बाद स्कार्पियो गाड़ी का नो पार्किंग जोन में गाड़ी खड़ी करने, प्रशासनिक अधिकारी के साथ दुर्व्यवहार करने तथा गाड़ी की आरसी नहीं होने पर 7500 रुपये का चालान कर दिया।

हांसी। एसडीएम से बहस करने वाले युवक का चालान करते ट्रैफिक पुलिस अधिकारी तथा भगतसिंह रोड़ पर दुकानदारों को अतिक्रमण नहीं करने को लेकर हिदायत देते एसडीएम।

दुकानदारों को दी हिदायत

एसडीएम राजेश खोथ एकत्रित दुकानदारों व भीड़ से नो पार्किंग जोन में गाड़ी खड़ी करने तथा दुकानों के बाहर अतिक्रमण नहीं करने की हिदायत दी।

आंबेडकर की प्रतिमा खंडित करने वाले की जमानत रद

हिसार। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश गगनदीप मित्तल की अदालत ने बरवाला क्षेत्र के गांव बधावड में डॉ. अंबेडकर भवन में स्थापित डॉ. बीआर अंबेडकर की प्रतिमा खंडित करने वाले दो युवकों सौरभ व अमन में से एक आरोपी अमन उर्फ मच्छर की नियमित्त जमानत याचिका खारिज कर दी है। दोनों आरोपी 8 फरवरी से जेल में बंद है। आरोपी अमन के वकील ने अदालत के सामने दलील पेश की कि अमन को मुकदमा में झूठा फंसाया गया है। सीसीटीवी फुटेज में यह भी नहीं पता चल रहा है कि आरोपी कौन है तथा प्रतिमा किसकी है।

- दोनों आरोपी 8 फरवरी से जेल में हैं बंद
- दोनों आरोपी गांव बधावड के निवासी

पीड़ित पक्ष के वकील रजत कल्सन ने बताया कि दोनों आरोपी गांव बधावड के ही है तथा गांव के स्थानीय लोगों ने उनकी पहचान की है। आरोपियों में योजनाबद्ध तरीके से लोहे के हथियार से डॉक्टर अंबेडकर की प्रतिमा को रात्रि के समय खंडित किया तथा बाजू को तोड़कर अपने साथ ले गए। वारदात को अंजाम देने के बाद उन्होंने टूटी हुई प्रतिमा के समक्ष सेल्फी ली तथा उसे सोशल मीडिया पर स्टेटस पर अपलोड किया। कल्सन ने कहा कि आरोपियों से डॉक्टर अंबेडकर की प्रतिमा की बाजू व लोहे का हथियार बरामद हुआ है।

विशेष : विश्व जल दिवस, 22 मार्च

बच्चो, हम हर वर्ष 22 मार्च को विश्व जल दिवस यानी 'वर्ल्ड वाटर-डे' मनाते हैं। जल का हमारे जीवन में क्या महत्व है, विश्व जल दिवस हम किन उद्देश्यों को लेकर मनाते हैं, इस बारे में तुम्हें जरूर जानना चाहिए।

जीवन है जल आओ करें संरक्षित

अवेयरनेस / शिखर चंद जैन

बच्चो, जीवन के लिए हवा, भोजन और पानी तीनों बहुत जरूरी हैं। हम तभी जीवित रह सकते हैं, जब सांस लेने के लिए हवा मिले, पेट भरने के लिए भोजन और प्यास लगने पर पानी मिले। पृथ्वी पर अगर पानी न हो तो जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। बच्चो, इस संदर्भ में तुम्हें यह भी जानकारी होनी चाहिए कि हमारी पृथ्वी का लगभग 71 प्रतिशत हिस्सा जल से भरा है, लेकिन हम जो पानी उपयोग कर सकते हैं, वह पृथ्वी पर मौजूद पानी का एक प्रतिशत से भी कम हिस्सा है, जिसे हम मीठा पानी कहते हैं। यह स्वच्छ और मीठा पानी दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा है। आज इसके संरक्षण की बहुत आवश्यकता है।

विश्व जल दिवस की शुरुआत

जीवन के लिए जल के महत्व को समझते हुए और विश्व में लगातार स्वच्छ और पेय जल की कमी को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र यानी यूनाइटेड नेशंस द्वारा प्रत्येक वर्ष 22 मार्च को विश्व जल दिवस को मनाने का निर्णय लिया गया। 22 मार्च 1993 को पहला विश्व जल दिवस यानी 'वर्ल्ड वाटर-डे' मनाया गया। इसके बाद से प्रत्येक वर्ष विश्व जल दिवस मनाया जाता है।

हर साल रहती है एक थीम

यूनाइटेड नेशंस के संगठनों के परामर्श से प्रत्येक वर्ष विश्व जल दिवस की एक थीम रखी जाती है। 2025 की थीम है-ग्लेशियर संरक्षण। बच्चो, तुम्हें पता होगा कि ग्लेशियर दुनिया में मीठे पानी का बहुत ही महत्वपूर्ण स्रोत है। भविष्य में हमारे सामने जल संकट न आए, इसके लिए इन ग्लेशियरों का बचा रहना बहुत जरूरी है। बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग और अन्य कई कारणों से ये ग्लेशियर बहुत ही तेजी से पिघल रहे हैं। 'ग्लेशियर संरक्षण' थीम दुनिया के ग्लेशियरों की रक्षा करने की आवश्यकता पर जोर देगी। हम अपने ग्लेशियरों को कैसे बचाएं, इसके लिए लोगों को जागरूक करेगी।

क्या हैं इसके उद्देश्य

अब विश्व जल दिवस के उद्देश्यों की बात करते हैं। इसके प्रमुख उद्देश्य हैं-सभी को पीने योग्य साफ मीठा पानी मिले। इसके लिए पानी को सही तरीके से साफ किया जाए। पानी को जिम्मेदारी के साथ इस्तेमाल किया जाए। पानी की बर्बादी को रोका जाए। इसके साथ ही हम ऐसे नेचर-फ्रेंडली कदम उठाएं, जिससे ग्लोबल वार्मिंग कम हो।

क्या-क्या होता है आयोजन में

विश्व जल दिवस के अवसर पर दुनिया भर में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से पर्यावरणविद और नीति निर्माता, समुदाय और संगठन जल संकट और इसके समाधान के उपायों पर चर्चा करते हैं। स्कूलों और कॉलेजों में भी जल संरक्षण और प्रबंधन पर सेमिनार और अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। स्थानीय समूह और स्वयंसेवी संगठन (एनजीओ) नदियों, झीलों और अन्य जल निकायों (वाटर बॉडीज) की सफाई करते हैं। इसके अलावा अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े सेलिब्रिटीज लोगों को पानी की बर्बादी न करने और पर्यावरण अनुकूल आदतें अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। *

जल संरक्षण के लिए तुम भी करो प्रयास

बच्चो, तुम भी अपने छोटे-छोटे प्रयासों से जल संरक्षण में अपना योगदान दे सकते हो, जैसे-

- घर में पानी के उपयोग न होने पर नल बंद कर दो।
- अपने दोस्तों को भी जल बचाने के महत्व के बारे में बताओ।
- जल संरक्षण के बारे में जरूरी फैक्ट और इसका महत्व आकर्षक पोस्टर और वीडियोज बनाकर लोगों को बताओ।
- किसी एनजीओ या संगठन से वॉलंटियर के रूप में जुड़कर अपने आस-पास की प्रदूषित नदियों, झीलों और समुद्र तटों को साफ करने के कामों में अपना योगदान दो।

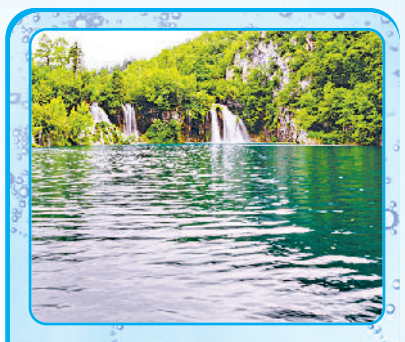

कविता / अखिलेश श्रीवास्तव चमन

पानी

जिस पृथ्वी पर रहते हैं हम
उसकी अजब कहानी है।
एक भाग पर स्थल इसके
तीन भाग पर पानी है।
'लेवोइजो' ने बतलाई
तब सारी दुनिया जानी।
कैसे बनता, कहां से आता
क्या होता है यह पानी।
वैज्ञानिक कहते-पानी है
दो गैसों का संयोजन।
दो हिस्सा हाइड्रोजन होता
एक भाग है ऑक्सीजन।
यों तो हम जिस ओर भी देखें
बस जल ही जल फैला है।
लेकिन उसमें से ज्यादातर
प्रदूषित और मैला है।
साफ, स्वच्छ पानी छोड़े
कपड़े, बरतन पर दाग नहीं।
रंगहीन होता है,
इसमें गंध नहीं और स्वाद नहीं।
प्रदूषित पानी में कुछ
रोगाणु हैं होते मिले हुए।
घातक खनिज रसायन ढेरों
इसके अंदर घुले हुए।
बात साधारण, नहीं जानते
पर इसको बहुतेरे लोग।
गंदा पानी पीने से ही
हो जाते हैं ढेरों रोग।

जानकारी / नयनतारा

बच्चो, दूध पीना स्वास्थ्य के लिए बहुत ज्यादा लाभकारी है। इसीलिए इसे 'कंप्लीट फूड' भी कहा जाता है। इंसान ने गाय के दूध दुहने की शुरुआत कब से की, दूध के प्रमुख स्रोत क्या हैं, जानो।

गाय के दूध की कब से हुई शुरुआत

बच्चो, दूध तो तुम सभी पीते होगे, लेकिन क्या तुम्हारे मन में कभी ये सवाल आया कि दुनिया में सबसे पहले गाय के दूध यानी काऊ मिल्क का इस्तेमाल कब किया गया? या फिर काऊ मिल्क के उपयोग का सबसे पुराना साक्ष्य कब का मिलता है?

हजारों सालों से उपयोग हो रहा गाय का दूध: मान्यताओं के अनुसार गाय के दूध का प्रयोग मानव सभ्यता के आदिकाल से किया जाता रहा है। साक्ष्यों की बात करें तो प्राचीन नगर बेबीलोन (वर्तमान इराक देश) के निकट लगभग पांच हजार साल पुराना एक मंदिर खोजा गया है। मंदिर की दीवारों पर अनेक चित्र उकेरे हुए हैं। एक चित्र में लोगों को गाय का दूध निकालते हुए दिखाया गया है।

चित्र में क्या दिखाया गया है: बेबीलोन के मंदिर से प्राप्त चित्र में एक व्यक्ति पीछे की तरफ से दूध निकाल रहा है, वह एक स्टूल जैसी चीज पर बैठा हुआ है। अन्य व्यक्ति जमीन पर रखे कंटेनर में दूध ले रहे हैं। एक तीसरा समूह पत्थर के विशाल जारों में निकाले गए दूध को एकत्र कर रहे हैं। इस चित्र से ऐसा प्रतीत होता है कि हजारों साल पहले भी गाय से दूध निकालने, इसके इस्तेमाल करने के साथ-साथ गाय के दूध का व्यापार भी काफी संगठित था।

आधुनिक युग में दूध के प्रमुख स्रोत: आज जो दूध हम इस्तेमाल करते हैं, उसका प्रमुख स्रोत गाय के अलावा भैंस, बकरी आदि जंतु भी हैं। इसके अलावा दुनिया के विभिन्न हिस्सों में वहां पाए जाने वाले अन्य जानवरों के दूध का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे-एशिया महाद्वीप में अलग-अलग स्थानों पर गाय-भैंस के अलावा ऊंटनी, घोड़ी, याक और भेड़ जैसे जानवर भी दूध के प्रमुख स्रोत हैं। बर्फीले इलाकों में रहने वाली एस्किमो और लैपलैंडर्स जनजाति दूध के लिए कारिबोऊ और रेनडियर का उपयोग करते हैं। हमारे भारत और सेंट्रल एशिया के देशों में गाय के साथ-साथ भैंस भी दूध का प्रमुख स्रोत है। *

दूध है कंप्लीट फूड

बच्चो, दूध को संपूर्ण भोजन यानी 'कंप्लीट फूड' कहा जाता है। इसमें कई सारे पौष्टिक तत्व एवं न्यूट्रीएंट्स, जैसे-कैल्शियम, फॉस्फोरस, प्रोटीन, मिल्क शुगर (लैक्टोज) और मिल्क प्रोटीन (कैसीन) आदि पाए जाते हैं। दूध आसानी से पच जाता है, इसलिए ये तत्व हमारे शरीर में जल्दी और सही ढंग से एब्जॉर्ब हो जाते हैं। इसलिए बच्चो हमें रोज दूध पीना चाहिए।

तुम्हारे लिए नई किताब / विज्ञान भूषण

देशप्रेम की रोमांचक कहानी

बच्चो, 'ये देश हमारा है' देशप्रेम की भावना जगाने वाला एक रोचक-रोमांचक बाल उपन्यास है। इसमें पांच एनसीसी कैडेट्स सक्षम, अक्षय, हार्दिक, आराध्या और मान्यता ट्रेनिंग कैंप के लिए सेना के अधिकारी कैप्टन ज्ञानेंद्र वर्मा के साथ हिमालय के सीमावर्ती इलाके में जाते हैं। लेकिन वे सब जिस हेलीकॉप्टर में जा रहे होते हैं, उसका एक्सीडेंट हो जाता है। उनकी जान तो बच जाती है लेकिन वे घने जंगल में फंस जाते हैं। वहां दुश्मन देश के सैनिक कैप्टन वर्मा को पकड़ लेते हैं। फिर उन्हें छुड़ाने के लिए सक्षम किस बुद्धिमानी से उन सबका पीछा करता है? कैसे पांचों बहादुर बच्चे जंगल के निवासियों की मदद से देश के दुश्मनों के गुप्त अड्डे का पता भारतीय सेना को बताकर अदम्य साहस का परिचय देते हैं, यह जानने के लिए तुमको यह रोमांचक उपन्यास पढ़ना होगा। पांच बच्चों की देशभक्ति और साहस से भरी यह कहानी पढ़कर तुम्हारे मन में भी अपने देश के लिए कुछ करने की भावना प्रबल हो उठेगी।

किताब: ये देश हमारा है (बाल उपन्यास), **लेखक:** संजीव जायसवाल 'संजय', **मूल्य:** 199 रुपए, **प्रकाशक:** फ्लाईड्रीम्स पब्लिकेशंस, दिल्ली

हिंदी ज्ञान / आशा शर्मा

बच्चो, निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के रिक्त स्थानों में एक ही शब्द भरा जाएगा। उस उपयुक्त शब्द को भरकर इन मुहावरों/लोकोक्तियों को पूरा करो।

1. .... का धुला होना।
2. .... का .... और पानी का पानी करना।
3. .... के दांत टूटना।
4. .... का जला छाछ भी फूंक कर पीता है।
5. .... दही की नदियां बहना।
6. छठी का .... याद आना।
7. .... के कुल्ले करना।
8. .... में खट्टड़ डालना।

[illegible]

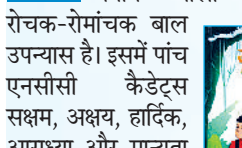

जीके क्विज-146

1. फरवरी 2025 के लिए आईसीसी मेंस प्लेयर ऑफ द मंथ अवार्ड से किसे सम्मानित किया गया?
2. हाल ही में किस ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी ने वन-डे क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की?
3. भारत का सर्वाधिक साक्षर राज्य कौन-सा है?
4. डूरंड कप का संबंध किस खेल से है?
5. बृहस्पति के सबसे बड़े उपग्रह का नाम क्या है?
6. भारत का नेपोलियन किसे कहा जाता है?
7. महाकालेश्वर मंदिर किस राज्य में स्थित है?
8. भारत रत्न से सम्मानित पहले विदेशी नागरिक कौन थे?
9. किस नदी को 'चीन का शोक' कहा जाता है?
10. झारखंड की राजधानी कहां है?

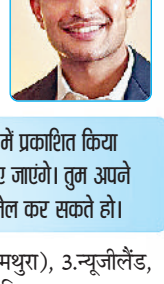

बच्चो, जीके क्विज-146 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे। तुम अपने जवाब हमें **balbhoomihb@gmail.com** पर मेल कर सकते हो।

जीके क्विज-145 का उत्तर : 1.होलिका, 2.बरसाना (मथुरा), 3.न्यूजीलैंड, 4.गुजरात, 5. 22 मार्च, 6.अचंता शरत कमल, 7.तमिलनाडु, 8.जयपुर, 9.बांग्लादेश, 10.पेरिस

जीके क्विज-145 का सही उत्तर देने वाले : गुंजा-रायपुर, शुभम-बलौदा बाजार, डॉली-दुर्ग, अंजना-बालोद, साकेत-दुर्ग, प्रतीक-बलौदा बाजार, दिव्या-रोहतक, साकेत-महासमुंद, कमल-महेंद्रगढ़, दिशा-बेमेतरा, कुणाल-रोहतक

कौए को भाया काला रंग

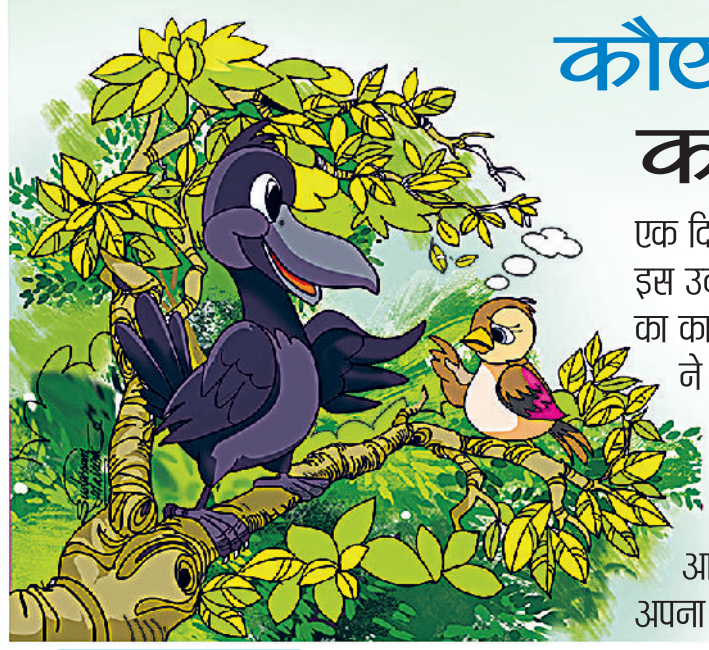

एक दिन कौआ बहुत उदास था। उसकी इस उदासी की वजह थी-उसके पंखों का काला रंग। लेकिन जब कई पक्षियों ने आकर कौए को अपनी-अपनी आपबीती सुनाई तो उसे लगा कि उसका काला रंग सबसे अच्छा है। इन पक्षियों ने ऐसी क्या आपबीती कौए को सुनाई, जो उसे अपना काला रंग भा गया?

कहानी
मोहम्मद अरशद खान

कौआ पेड़ की डाल पर चुपचाप बैठा था। उसके काले-चमकीले पंख धूप में चमक रहे थे। लेकिन उसे अपने पंखों का काला रंग पसंद नहीं था। इसलिए वह उदास था। तभी बगल की डाल पर एक गौरैया आकर बैठ गई। पहले तो कौए ने उधर ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब एकाएक उसकी नजर गौरैया के पंखों पर पड़ी तो वह चौंक पड़ा! उसके पंखों में गुलाबी रंग लगा हुआ था। कौआ हंस पड़ा, उसने पूछा, 'अरे! तुम्हारे पंखों को यह क्या हुआ?'

गौरैया कुछ नहीं बोली। उदासी से मुंह लटका लिया। कौए को हैरानी हुई, वह बोला, 'तुम इसे साफ क्यों नहीं कर लेतीं?'

गौरैया उदास स्वर में बोली, 'मैंने बहुत कोशिश की। धूल में लोट-पोट मचाई। पोखर में छपछैया की, लेकिन जाने कैसा रंग है, छूटता ही नहीं। अब तो इन पंखों के झड़ने का इंतजार कर रही हूं, तभी इससे छुटकारा मिलेगा।' 'पर यह रंग लगा कैसे?' कौए को जिज्ञासा हुई। 'दरअसल...।' गौरैया ने बताया, 'तुम्हें तो पता ही है कि मैं इंसानों के बीच रहना पसंद करती हूं। एक दिन मैं एक घर की मुंडेर पर बैठी थी। मुझे आंगन में कुछ दाने पड़े दिखाई दिए।

भूख तेज लगी थी। मैंने आव देखा न ताव, दानों पर झपट पड़ी। जैसे ही मैंने चोंच मारी कि 'खट' की आवाज हुई और चारों तरफ अंधेरा छा गया।' 'अरे...!' कौआ हैरानी से बोला। 'हां, असल में कुछ शरारती बच्चों ने एक डलिया को लकड़ी के सहारे टिका रखा था और लकड़ी को रस्सी से बांधकर छिप गए थे। मैं दानों के चक्कर में जैसे ही अंदर पहुंची कि उन्होंने रस्सी खींच ली और मैं डलिया के अंदर बंद हो गई। फिर वे मुझे पकड़ कर बहुत देर तक मेरे साथ खेलते रहे। जब मन भर गया तो मेरे पंखों पर रंग लगाकर छोड़ दिया।' गौरैया ने बताया।

'पर उन्होंने ऐसा क्यों किया?' कौए ने पूछा। गौरैया ने वजह बताई, 'वे कह रहे थे कि मैं जहां कहीं उड़ती दिखूंगी तो वे मुझे पहचान लेंगे।' गौरैया अपनी कहानी बताकर चली गई। तभी दो कबूतर उड़कर उधर आ बैठे। उनमें एक के माथे पर नीला और दूसरे के लाल रंग का धब्बा लगा हुआ था। 'क्या तुम्हें भी शरारती बच्चों ने पकड़ लिया था?' कौए ने उत्सुकता से पूछा।

'नहीं तो..!' दोनों कबूतर एक साथ बोले। 'तो फिर तुम्हारे माथे पर रंग कैसे लगा हुआ है?' कौए ने जानना चाहा।

'यह तो हमारे मालिक ने लगाया है ताकि वे हमें पहचान सकें।' लाल धब्बे वाले कबूतर ने दुख के साथ बताया।

'हम दोनों पक्के दोस्त हैं, लेकिन बड़ी मुश्किल से मिल पाते हैं। हम दोनों के मालिक अलग-अलग हैं। वे हमें मिलने ही नहीं देते।' नीले धब्बे वाले कबूतर ने लंबी सांस लेते हुए कहा। 'चलो, अब अपने दड़बे में वापस लौटने का समय हो गया है। वर्ना हमारे मालिक हमें ढूंढते हुए यहां भी आ पहुंचेंगे।' यह कहते हुए दोनों कबूतर अपने पंखों से 'सन-सन-सन' आवाजें निकालते हुए वापस चले गए। कबूतरों के जाते ही एक बगुला हांफता हुआ उधर आ गया। उसके पंखों पर कीचड़ और काई जमी हुई थी।

कौए ने पूछा, 'बगुले भाई, तुम्हारे पंख कैसे गंदे हो गए?' बगुला उबासी लेता हुआ बोला, 'मैं दिन भर काई भरे कीचड़-पानी में रहता हूं। बिना हिले-डुले चुपचाप खड़े रहने से पंखों पर गंदगी चढ़ जाती है। इसीलिए मेरे पंख गंदे रहते हैं।' 'लेकिन पानी से धोने पर ये साफ भी तो हो सकते हैं।' कौए ने कहा।

'हां, पर कीचड़ में घुसने पर फिर लग जाती है। इसलिए मैं इसे साफ करने की तरफ ध्यान ही नहीं देता।' कहकर बगुला धीमे से हंसा और वहां से चला गया। कुछ ही देर में वहां सतभैये आकर चहचहाने लगे। कौए ने ध्यान से देखा तो एक का रंग बिल्कुल पीला हो रहा था। कौए ने सोचा शायद वह इन सबका लीडर होगा। लेकिन जब कौए ने पूछा तो उसने बताया, 'एक बार हम लोग एक घर के आंगन में उछल-कूद मचा रहे थे। आंगन में खाने-पीने की चीजें सूखने को रखी थीं। हल्दी का पावडर भी रखा था। अचानक एक बिल्ली हम पर झपट पड़ी। बिल्ली का हमला देखकर सब तो भाग लिए पर मैं हड़बड़ी में हल्दी के टोकरे में जा गिरा। वह दिन है और आज का दिन, पंखों से यह रंग उतरता ही नहीं।'

उसकी बात पर चहचहा रहे सतभैये चुप हो गए। फिर उनमें से एक ने कौए के पंखों की ओर देखते हुए कहा, 'लेकिन तुम्हारे पंखों का रंग सबसे अच्छा है। काले रंग पर कोई दूसरा रंग चढ़ ही नहीं सकता।' 'हां, मुझे अपना काला रंग पसंद है।' कौए ने कहा और खुशी से अपने पंख फैला दिए। उसके पंखों पर सुनहरी धूप चमकने लगी। *

कविता
सुरेंद्र विक्रम

बसंत के दिन आए...

सूरज प्रतिदिन नियम बनाकर
उगता है फिर ढल जाता है।
चंदा तारों के संग मिलकर
आसमान को दमकाता है।
सूरज की किरणें आती हैं
पत्ती-पत्ती खिल जाती है।
चंदा की किरणों से मिलकर
खड़ी कुमुदिनी मुस्काती है।
मौसम बदला, सूरज मचला
बड़ी-बड़ी बांहें फैलाए।
छू-मंतर हैं जाड़े के दिन
अब बसंत के दिन आए।
पीली सरसों फूली हुई हैं
पीली हुईं दिशाएं सब।
नया बौर आमों में आया
भौंरे गुन-गुन गाएं अब।
फूला-फूला 'तीसी' का मन
चना-मटर की बजीं तालियां।
मस्त-मगन हो झूम रही हैं
गेहूं की सब हरी बालियां।
दूर-दूर तक खुले खेत में
हवा नाचती छम-छम-छम।
सोंधी-सोंधी खुशबू फैली
जिसमें डूब गए हैं हम।

रंग भरो-171

रंग भरो-171 में दिए गए चित्र को तुम लोगों ने बहुत अच्छे से रंगकर हमें भेजा। उनमें से चुना गया सबसे अच्छा चित्र हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। उसे रंगकर भेजने वाले बच्चे के चित्र के साथ कुछ अन्य बच्चों के नाम और चित्र भी प्रकाशित कर रहे हैं।

रितेश, मटियारी

हिताक्षी, महेंद्रगढ़

सौम्य, बालोद

तक्षित, बिलासपुर

कुंजल, कोरबा

बेबी, मटियारी

इनके भी चित्र रहे प्रशंसनीय

आस्तिका-चांपा, आलोक-दुर्ग, भावना-भिवानी, डॉली-दुर्ग, डिंपल-दुर्ग, प्रगति-बिलासपुर, रिद्धि-भिवानी, रितिका-बिलासपुर, समृद्धि-चांपा, वेदिका-रायपुर, हितेश-दिल्ली, राकेश-धमतरी, अंकित-गुना, दिनेश-करनाल, अमन-बिलासपुर, स्वीटी-कोरबा

रंग भरो 172

बच्चो, यहां जंगल में मस्ती करते कुछ एनिमल्स का ब्लैक एंड व्हाइट चित्र दिया गया है। तुम इस चित्र को मनचाहे रंगों से रंग कर हमें भेजो। जिस बच्चे का चित्र सर्वश्रेष्ठ होगा, उसे हम बालभूमि में प्रकाशित करेंगे। चित्र के साथ अपनी फोटो, अपना और शहर का नाम हमें इस पते पर भेजो- संपादक - फीचर, हरिभूमि कार्यालय, 129, ट्रांसपोर्ट सेंटर, पंजाबी बाग, पश्चिमी दिल्ली, नई दिल्ली- 110035 या ई-मेल आईडी balbhoomi-hb@gmail.com पर मेल करो।

खबर संक्षेप

हांसी। पदक विजेता छात्राओं का स्वागत करते भाजपा जिलाध्यक्ष अशोक सैनी।

भाटला की दो बेटियों ने कबड्डी में जीते कांस्य पदक

हांसी। बरवाला रोड़ स्थित भाटला गांव की 2 बेटियां अंजलि व कोमल ने ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी सर्कल कबड्डी प्रतियोगिता में महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी रोहतक की तरफ से खेलते हुए कांस्य पदक प्राप्त किया। कांस्य पदक जीतने के बाद गांव पहुंची दोनों छात्राओं के लिए ग्रामीणों ने बाबा छोटू नाथ मंदिर के सामने सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

एचएयू में अनुसूचित जाति/जनजाति की महिलाओं के लिए प्रशिक्षण का आयोजन

महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनाकर उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार ला रहे : डॉ. शर्मा

■ प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र और अध्ययन सामग्री वितरित की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार : मुख्य अतिथि अधिकारियों एवं प्रतिभागियों के साथ। फोटो :हरिभूमि

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं भैंस अनुसंधान संस्थान की ओर से संयुक्त रूप से सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में 'दूध से मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करने', 'फल एवं सब्जी परिरक्षण' और 'मशरूम उत्पादन तकनीक' पर बेरोजगार युवाओं के लिए पांच दिवसीय तीन प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में 90 महिलाओं ने भाग लिया।

भैंस अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. यशपाल शर्मा मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। निदेशक डॉ. यशपाल शर्मा ने कहा कि महिलाओं के कौशल विकास के लिए निरंतर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं ताकि उन्हें आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनाकर उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सके। मशरूम उत्पादन तकनीक प्रशिक्षण में महिलाओं को बटन मशरूम, ढींगरि, दूधिया, शिटाके, कीड़ा-जड़ी इत्यादि मशरूम उत्पादन तकनीक पर व्यावहारिक ज्ञान देने के साथ-साथ मशरूम उत्पादक संदीप कुमार गांव सीसवाल के मशरूम फार्म वह विश्वविद्यालय की मशरूम टेक्नोलॉजी लैब का भी भ्रमण करवाया गया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और अध्ययन सामग्री भी वितरित की गई। संस्थान के सह निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने प्रशिक्षण के समापन अवसर पर सभी का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. ऐश्वर्या, डॉ. डीके शर्मा, डॉ. सतीश मेहता, डॉ. भूपेन्द्र सिंह व डॉ. विकाश हुड्डा मौजूद रहे।

नारनौंद। राजकीय महाविद्यालय खेड़ी चोपटा में रैली निकलती हुई छात्राएं।

छात्रों ने प्रभात रैली निकालकर लोगों को किया जागरूक

नारनौंद। राजकीय महाविद्यालय खेड़ी चौपटा गुरुवार को महाविद्यालय के प्राचार्य अनिल कुमार के निर्देशन में चल रहे सात दिवसीय एनएसएस कैम्प के तीसरे दिन छात्राओं ने प्रभात फेरी निकालकर जागरूक किया। एनएसएस पार्क में सफाई अभियान चलाकर पार्क को सुन्दर रूप देने में सामाजिक भूमिका निभाई। खेड़ी चौपटा पुलिस चौकी से एएसआई सूबे सिंह ने नेतृत्व में साइबर ब्रांच से पहुंचे विकास ने साइबर क्राइम एवं साइबर स्क्योरिटी विषय पर छात्रों आपको बताया कि आजकल अनेक लोग साइबर के माध्यम से ठगी करके चूना लगाने का काम कर रहे हैं इसलिए सतर्क रहने की जरूरत है किसी भी को अपना ओटीपी नंबर नहीं देना चाहिए वही लालच भरे एसएमएस से दूर रहना चाहिए। वह लोग आपको लालच देकर ठगने का काम करते हैं। सभी स्वयंसेवको ने साइबर सम्बधित मुख्य जानकारी प्राप्त कर ज्ञानवर्धन किया। कार्यक्रम अधिकारी विद्यावती ने बताया कि प्राचार्य ने वक्ता का स्वागत किया और प्राध्यापक दिनेश ने आभार व्यक्त किया। प्राचार्य अनिल कुमार ने हरियाणवी संस्कृति रैली को हरी झण्डी दे कर रवाना किया। स्वयंसेवकों ने हरियाणवी संस्कृति रैली की झांकी से गोद लिए गाँव खेड़ी लोहचब के ग्रामीणों का मन मोह लिया। क्विज कम्पीटिशन का आयोजन किया गया। प्राध्यापक बहादुर ने स्वयंसेवकों को अपने व्याख्यान एनएसएस का अतीत और वर्तमान में अन्त सम्बंध द्वारा सम्बोधित किया।

प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 2590 पात्र लाभार्थियों को मिली पहली किस्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार। वीसी के दौरान उपस्थित उपायुक्त अनीश यादव।

प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के तहत गुरुवार को जिले के 2590 पात्र लाभार्थियों को मकान निर्माण हेतु वित्तीय सहायता के रूप में 45 हजार की पहली किस्त जारी की गई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने चंडीगढ़ से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से लाभार्थियों को शुभकामनाएं दी।

उपायुक्त अनीश यादव ने बताया कि जिले में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत प्राप्त 3888 आवेदनों में से 2590 आवेदनों को वर्ष 2024-25 के लिए स्वीकृति प्रदान की गई है। कुल 2590 आवेदनों में से आदमपुर खंड के 78 आवेदक, अग्रोहा खंड के 42 आवेदक, बरवाला खंड के 176 आवेदक, हांसी-1 खंड के 475 आवेदक, हांसी-2 खंड के 277 आवेदक, हिसार-1 खंड के 228, हिसार-2 खंड के 376 आवेदक, नारनौंद खंड के 226 आवेदक और उकलाना खंड के 712 आवेदकों को पहली किस्त जारी की गई। शेष आवेदनों के लिए ब्लॉक स्तर पर सर्वेक्षण, निरीक्षण और सत्यापन प्रक्रिया जारी है। पात्र लाभार्थियों को योजना के तहत 1.38 लाख रुपये की कुल अनुदान राशि तीन किस्तों में प्रदान की जाती है। उपायुक्त अनीश यादव ने कहा कि पहली किश्त के तहत 45 हजार रुपये जारी कर दिए हैं। दूसरी किश्त में 60 हजार रुपये तथा तीसरी किस्त में 33 हजार रुपये दिए जाएंगे। लाभार्थियों को 90 दिनों की अकुशल मनरेगा मजदूरी का भी लाभ दिया जाएगा।

श्रीकृष्ण प्रणामी मंदिर व बाल सेवा आश्रम, कैमरी में पारायण पाठ पढ़ते श्रद्धालु।

आश्रम के बच्चों ने दया का दरिया नाटक का मंचन कर अमिट छाप छोड़ी

हिसार। श्रीकृष्ण प्रणामी मंदिर व बाल सेवा आश्रम, कैमरी के पांच दिवसीय 50वें वार्षिकोत्सव स्वर्ण जयंती महोत्सव के दूसरे दिन की शुरुआत 108 पारायण पाठ से की गई। श्रद्धालुओं ने पूरे श्रद्धा भाव से पाठ का वाचन किया। हिसार जिले के अलावा बड़ी संख्या में दूसरे प्रदेशों से भी श्रद्धालुओं ने भाग लिया। पाठ के उपरांत आश्रम में विभिन्न कार्यक्रम किए गए। दोपहर बाद आश्रम के मुख्य संचालक रहे ब्रह्मलीन दयालदास महाराज के जीवन पर आधारित दया का दरिया नाटक का मंचन किया गया। नाटक में आश्रम में रहने वाले बच्चों ने सारे किरदार निभाये। नाटक में स्वामी दयालदास महाराज की युवावस्था से लेकर लोकगमन होने तक का सारा वृतांत दिखाया गया। दयालदास महाराज का वास्तविक नाम दरिया था। वे गांव कैमरी में किसान परिवार में पैदा हुए।

दयानंद कॉलेज एवं नारायणी वेलफेयर सोसायटी के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

दयानंद कॉलेज की महिला प्रकोष्ठ (वुमैन सैल) ने नारायणी वेलफेयर सोसायटी के साथ मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टेंडिग (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विक्रमजीत सिंह ने गुरुवार को बताया कि इस एमओयू द्वारा दयानंद महाविद्यालय की छात्राओं को आत्मनिर्भर एवं आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। महिला सशक्तिकरण के लिए कार्यक्रम और गतिविधियां आयोजित की जाएगी। इसमें दोनों पक्ष मिलकर छात्राओं की भागीदारी को मद्देनज़र रखते हुए जागरूकता अभियान, कार्यशालाएं तथा विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर व्याख्यान आयोजित किए जाएंगे। यह एमओयू 18 मार्च 2027 तक की अवधि के लिए किया गया है। एमओयू के लिए दयानंद कॉलेज की ओर से प्राचार्य डॉ. विक्रमजीत सिंह, डॉ. वलेरिया सेठी, संयोजिका महिला प्रकोष्ठ, डॉ. रेनू राठी, सह-संयोजिका महिला प्रकोष्ठ उपस्थित रही। नारायणी वेलफेयर सोसायटी की ओर से गुंजन गोयल व अंशुमन गोयल उपस्थित रहे।

हिसार। एमओयू का आदान-प्रदान करते दोनों पक्ष।

हिसार। हिन्दू नववर्ष महोत्सव के लिए की जा रही संध्या फेरी में उपस्थित मातृशक्ति।

जिस मनुष्य पर प्रभु की कृपा हो उसका बेड़ा पार हो जाता है : शास्त्री

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

भारतीय त्योहारों में से सर्वप्रथम मनाए जाने वाले त्योहार हिंदू नववर्ष महोत्सव की अलख जगाने के लिए घर-घर व गली-गली जाकर प्रचार व प्रसार किया जा रहा है।

श्री प्रभु भक्त संकीर्तन मंडल द्वारा संध्या फेरी का आयोजन करके हिंदू नववर्ष महोत्सव में शामिल होने के लिए आमंत्रित भी किया जा रहा है। विश्व हिन्दू परिषद के तत्वावधान में 29 मार्च को हिसार की नई अनाज मंडी के विशाल शेड के नीचे इस महोत्सव का आयोजन होगा और इसमें विभिन्न क्षेत्रों से हजारों लोग हिस्सा लेंगे। प्रो. दीपक कुमार के नेतृत्व में संध्या फेरी के दौरान श्याम बाबा के भजन व भारत माता के गीत गाते हुए टोली आगे बढ़ती है। इस दौरान भारत माता का चित्र व भारत माता की आरती विशेष आकर्षण का केंद्र रहते हैं। शहर से विभिन्न क्षेत्रों एमसी कॉलोनी व हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी सहित कई क्षेत्रों में संध्या फेरी निकाली गई है।

श्रीमद्भागवत कथा में श्रीकृष्ण जन्म की झांकी देखकर झूमने लगे श्रद्धालु

■ भारत माता मंदिर में सात दिवसीय श्रीमदभागवत कथा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

भारत माता मंदिर में चल रही श्रीमद्भागवत कथा के दौरान उपस्थित श्रद्धालु।

एमसी कॉलोनी स्थित भारत माता मंदिर में सात दिवसीय श्रीमदभागवत कथा में श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ती जा रही है। कथा के दौरान प्रसिद्ध कथा व्यास आचार्य पंडित कृष्ण शरण शास्त्री जी महाराज ने श्रीकृष्ण जन्म से संबंधित विभिन्न प्रसंग सुनाकर अभिभूत कर दिया।

श्रीकृष्ण जन्म की भव्य झांकी भी निकाली गई। इस झांकी को देखकर श्रद्धालु झूमने लगे। पंडित कृष्ण शरण शास्त्री जी ने श्रद्धालुओं को प्रभु भक्ति में मन लगाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जिस मनुष्य पर प्रभु की कृपा हो जाती है उसका बेड़ा पार हो जाता है। मंदिर के संरक्षक अनिल महत्ता ने बताया कि भारत माता मंदिर में 22 मार्च तक श्रीमदभागवत कथा का आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि हर रोज सायं 3 बजे से सायं 6 बजे तक श्रीमदभागवत कथा का समय रहता है। श्रीमदभागवत कथा के उपरांत हर रोज आरती का आयोजन भी किया जाता है। सात दिवसीय श्रीमदभागवत कथा के उपरांत 23 मार्च को प्रातः हवन व भजन एवं दोपहर को अटूट भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

नारनौंद के नवनियुक्त चेयरमैन शमशेर कूकन ने की सीएम से मुलाकात, जल्द होंगे भाजपा में शामिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौंद

नारनौंद नगर पालिका के नवनियुक्त चेयरमैन शमशेर कूकन ने विधायक रामकुमार गौतम के साथ प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से मुलाकात कर भाजपा में शामिल होने के संकेत दे दिए है। वो जल्द ही भाजपा में शामिल होकर नारनौंद में विकास के कार्यों को पंख लगाना चाहते हैं।

चेयरमैन शमशेर कूकन ने बताया कि वह विधायक रामकुमार गौतम के साथ चंडीगढ़ में मुलाकात करने के लिए पहुंचे थे। चेयरमैन बनने के बाद मुख्यमंत्री को शुभकामनाएं देनी थी ताकि जनता से किए हुए वायदों को पूरा किया जा सकें। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया है कि नारनौंद में विकास कार्यों की कोई कमी नहीं रहने दी जाएगी। विधायक रामकुमार गौतम ने भी पूरा साथ देने का आश्वासन दिया है। एकजुट होकर शहर का विकास करवाकर नंबर वन बनाने का काम किया जाएगा। क्योंकि पिछले काफी सालों से नारनौंद विकास के मामले में पिछड़ता जा रहा है। सभी से मिलकर जनता के सहयोग से पूरे क्षेत्र का विकास किया जाएगा। पिछले दिनों शमशेर कूकन पूर्व वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु से भी मुलाकात की थी।

उसी समय से कयास लगाए जा रहे थे कि जल्द ही नवनियुक्त चेयरमैन भाजपा पार्टी का दामन थामने वाले हैं।

नारनौंद। मुख्यमंत्री को गुलदस्ता भेंट करते हुए चेयरमैन शमशेर कूकन व विधायक रामकुमार गौतम।

स्वास्थ्य विभाग ने मनाया वर्ल्ड ओरल हेल्थ डे

नारनौंद। स्वास्थ्य विभाग द्वारा गुरुवार को वर्ल्ड ओरल हेल्थ डे मनाया गया। इस मौके पर सामान्य अस्पताल के दंत चिकित्सक डॉ. दिनेश गुप्ता व डॉ. देवेंद्र कुमार ने बीडीपीओ कार्यालय के प्रांगण में आंगनवाड़ी वर्कर को संबोधित करते हुए कहा कि आज वर्ल्ड ओरल हेल्थ डे है।

सभी को स्वास्थ्य की प्राथमिकता के आधार पर देखभाल करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में हर साल 20 मार्च को विश्व मौखिक स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इस मौके पर डॉ. देवेंद्र ने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि अपने मुंह के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए।

योजना विभाग ने बुडाना रोड पर अवैध कॉलोनी को ढहाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौंद

शहर के बुडाना रोड पर नगर योजना विभाग द्वारा कार्रवाई करते हुए अवैध कालोनी पर पीला पंजा चला कर तोड़ दिया। नगर योजना विभाग द्वारा लगातार अवैध कालोनियों को तोड़ने का अभियान जारी है। ताकि अवैध कॉलोनी न पनप सके। शहर में इन दिनों प्रॉपर्टी डीलर लगातार अवैध कॉलोनी काट रहे हैं।

इस कड़ी में विभाग द्वारा गुरुवार को शहर के बुडाना रोड पर सात एकड़ में बनी कॉलोनी पर पीला पंजा चलाया गया। ड्यूटी मजिस्ट्रेट के तौर पर हांसी ब्लॉक कृषि अधिकारी रूपेश को नियुक्त किया गया था। इस दौरान भारी पुलिस बल भी तैनात रहा और अवैध रूप से बनाई गए ढांचों को गिराया गया। वहां पर बनाई गई सड़कों को भी तोड़ दिया गया। नगर योजनाकार विभाग के जेई हरिमोहन व सचिन ने जानकारी देते हुए बताया कि बुडाना रोड पर बनाई गई अवैध कालोनी को तोड़ने के लिए पहले नोटिस भेजे गए थे उसके बावजूद भी अवैध निर्माण होते रहे। जिसको पीला पंजा चलाकर तोड़ा गया है।

लोगों से अनुरोध है कि वह किसी भी अवैध कॉलोनी में कोई प्लांट न ले ताकि उनकी मेहनत की कमाई का पैसा खराब ना हो। इसलिए विभाग द्वारा अप्रूव्ड कॉलोनी में ही प्लॉट लेकर अपना मकान बनाएं। भविष्य में भी ऐसी कार्रवाई चलती रहेगी।

हांसी। रामायण टोल प्लाजा पर मीटिंग करते हिसार जिले के किसान नेता।

किसान पहले भी एक था और आज भी है : दशरथ

■ पंजाब पुलिस ने कायरता पूर्ण कार्रवाई की : मलिक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

खनौरी व शंभू बार्डर पर पिछले 13 महिने से अपनी मांगों को लेकर आंदोलन कर रहे किसानों को हिरासत में लेने तथा उनके तंबू व शेड उखाड़ दिए जाने के विरोध में गुरुवार दोपहर क्षेत्र के किसान नेताओं ने रामायण टोल प्लाजा पर मीटिंग की।

किसान नेताओं ने प्रदेश संगठन के नेताओं के आदेशानुसार कार्रवाई करने की बात कही। युवा किसान नेता दशरथ मलिक ने बुधवार शाम को पंजाब पुलिस द्वारा धोखे से हिरासत में लेने तथा रोड़ पर बनाए गए शेड व तंबूओं को उखाड़ने की कार्रवाई को कायरता पूर्ण कदम बताया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने किसान नेताओं को वार्ता के लिए चंडीगढ़ बुलाकर धोखे से हिरासत में लेकर अपना किसान विरोधी चेहरा उजागर कर दिया है। उन्होंने कहा कि मीटिंग में फैसला लिया गया है कि प्रदेश स्तर के किसान नेताओं के सड़क मार्ग जाम करने या टोल फ्री करवाने की जो भी कॉल आएगी उसे उसी के अनुसार लागू किया जाएगा। उन्होंने क्षेत्र के किसानों से अपील की कि वे सोशल मीडिया पर वायरल होने वाले संदेशों पर ध्यान न दें। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के हमारे किसान नेता राजू प्रधान व कैलाश प्रधान जो आदेश दें सिर्फ उसी पर ध्यान दें और और कोई भी करने से पहले इन किसान नेताओं से संपर्क अवश्य करें।

हांसी। पुलिस कर्मी को आवश्यक दिशा-निर्देश देते पुलिस अधिकारी।

जम्मू कश्मीर के उदमपुर में ड्यूटी के दौरान मनदीप पूनिया शहीद

'वंदे मातरम' और 'अमर रहे' के उदघोषों से गूंज उठा गांव ब्यानाखेड़ा, दो बहनों का इकलौता भाई था मनदीप पूनियां

राजकीय सम्मान के साथ शहीद को दी अंतिम विदाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बरवाला

जम्मू कश्मीर के उदमपुर बटालियन में देश की सेवा कर रहे गांव ब्यानाखेड़ा निवासी लगभग 30 वर्षीय मनदीप पूनियां की ड्यूटी के दौरान हार्ट अटैक आने से मौत हो गई है। मनदीप पूनियां का देश के तिरंगा में लिपटा पार्थिव शरीर बृहस्पतिवार प्रातः उनके गांव ब्यानाखेड़ा में पहुंचा।

जैसे ही उनका पार्थिव शरीर उनके गांव में पहुंचा गांव में शोक की लहर दौड़ गई और परिजनों के आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। उनके पार्थिव शरीर को गांव ब्यानाखेड़ा के श्मशान घाट में ले जाया गया जहां पर सेना के अधिकारियों और गांव ब्यानाखेड़ा समेत आसपास क्षेत्र के मौजिज लोगों ने मौके पर पहुंचकर शहीद मनदीप पूनियां को पुष्प अर्पित करके सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की। गांव ब्यानाखेड़ा के श्मशान घाट में राजकीय सम्मान के साथ उनके पार्थिव शरीर को अग्नि दी गई। गांव ब्यानाखेड़ा को वंदे मातरम और मनदीप पूनियां अमर रहे के उद्घोषों से गूंजा दिया। मनदीप पूनियां को अपने चचेरे भाई सोमवीर और चचेरी बहन ज्योति की 30 मार्च को होने वाली शादी में अपने गांव ब्यानाखेड़ा में आना था। वो जम्मू कश्मीर के रेलवे स्टेशन पर आया था परंतु रेलगाड़ी ना मिल पाने की वजह से वो वापिस अपने बटालियन चला गया।

वहीं बटालियन में ही उसको हार्ट अटैक का दौरा पड़ा और देश के लिए शहीद हो गया। मनदीप पूनियां दो बहनों का इकलौता भाई था। वर्ष 2016 में मनदीप पूनिया देश की सेवा करने के लिए फौज में भर्ती हुए थे।

हिसार। गांव ब्यानाखेड़ा में देश के तिरंगे में लिपटे मनदीप पूनियां के पार्थिव शरीर को ले जाते हुए व गांव ब्यानाखेड़ा के श्मशान घाट में शहीद मनदीप पूनियां का पार्थिव शरीर अग्नि की भेंट करते हुए। फोटो :हरिभूमि

खबर संक्षेप

उद्घोषित आरोपी गिरफ्तार

हांसी। नारनौंद पुलिस ने उद्घोषित आरोपी नारनौंद निवासी राम तिलक व विकास को गिरफ्तार किया गया। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार पकड़े गए दोनों आरोपियों को अदालत ने नारनौंद थाना में दर्ज लड़ाई-झगड़े के एक मामले में उद्घोषित आरोपी करार दिया हुआ था। पुलिस ने पकड़े गए दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश करके न्यायालय के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

विश्व गोरैया दिवस मनाया

हिसार। विश्व गोरैया दिवस पर आजाद नगर स्थित संपूर्ण हेल्थ रिसोर्ट में पंछियों के संरक्षण एवं जागरूकता के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में पंछियों के संरक्षण का आह्वान किया गया और पक्षियों व जानवरों का संरक्षण करने वाली हस्तियों को सम्मानित किया गया। इस दौरान श्रेष्ठ चित्रकला के लिए विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के आयोजक डॉ. संदीप कलियाणा ने बताया कि पक्षी मानव जीवन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विशेष भूमिका निभाते हैं।

एसपी शकुंतला रुहल की दादी का निधन

नारनौंद। नारनौंद की बेटी शकुंतला रुहल जो कि इंदौर में पुलिस अधीक्षक के पद पर तैनात हैं। उनकी दादी 90 वर्षीय शांति देवी का निधन हो गया।

उनके निधन पर अनेक समाजसेवी संगठनों ने गहरा शोक प्रकट किया है। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि दादी शांति देवी पिछले कुछ दिनों से बीमार चल रही थी। उनके पैतृक गांव नारनौंद में ही उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके निधन पर अनेक समाजसेवी संगठनों और राजनेताओं ने गहरा शोक प्रकट किया है।

विधानसभा में उठाई आदमपुर में आवाज

मंडी आदमपुर। हरियाणा विधानसभा में चल रहे बजट सत्र के दौरान आदमपुर के विधायक व सेवानिवृत्त आईएएस चंद्रप्रकाश ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को आदमपुर हलके की समस्याओं से अवगत करवाया और इन समस्याओं का समाधान करवाकर हलके के विकास कार्य करवाने पर जोर दिया। उन्होंने विभिन्न विकास कार्यों के लिए पर्याप्त बजट जारी करने की मांग की। उन्होंने विधानसभा में सडक़ों, जलापूर्ति, सिंचाई, शिक्षा व स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे उठाए और मजदूर, किसान, पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति वर्ग की आवाज उठाई।

सुनीता विलियम्स की सकुशल वापसी विज्ञान की जीत

हिसार। नासा की जानी-मानी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और उनके साथियों के स्पेसएक्स क्रू ड्रेगन यान के जरिए सफलतापूर्वक धरती पर लौट आने पर सामाजिक कार्यकर्ताओं बजरंग इंदल, कार्तिक संदल व विनोद गुरी ने ख़ुशी जताई है। उन्होंने कहा कि यह न केवल वैज्ञानिक प्रगति का ऐतिहासिक क्षण है बल्कि मानवता के असीम साहस और जिज्ञासा का भी प्रतीक है।

शिविर में उपायुक्त ने सुनीं जनसमस्याएं

हिसार। जिला सभागार में आयोजित समाधान शिविर में उपायुक्त अनीश यादव ने आमजन की समस्याओं को सुना। समाधान शिविर में विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें आईं, जिनमें से फैमिली आईडी और पेंशन से जुड़ी 10 शिकायतें प्रमुख थीं। इन सभी शिकायतों पर उपायुक्त ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश देकर मौके पर इनका समाधान सुनिश्चित करवाया। उन्होंने सभी विभागाध्यक्षों को सख्त हिदायत दी कि समाधान शिविर, जनसंवाद कार्यक्रमों, सीएम विंडो और सोशल मीडिया ग्रीवेंस ट्रैकर के माध्यम से प्राप्त होने वाली शिकायतों को प्राथमिकता के आधार पर निपटाया जाए।

संरक्षित पार्कों में कुल 400 पौधे लगाए

सवित्री के 75वें जन्मदिन पर जिंदल स्टेनलेस ने किया पौधरोपण

जिंदल स्टेनलेस पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखते हुए सतत पहलों का समर्थन करता है।

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। पौधरोपण अभियान में हिस्सा लेते जिंदल स्टेनलेस के अधिकारी, कर्मचारी व अन्य। *फोटो: हरिभूमि*

ओपी जिंदल समूह की चेयरपर्सन एमेरिटस और विधायक सवित्री जिंदल के 75वें जन्मदिन के अवसर पर, जिंदल स्टेनलेस ने पौधेरोपण कार्यकम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में सरकारी अधिकारियों, उच्चाधिकारी और जिंदल स्टेनलेस के सीनियर लीडर्स ने भाग लिया। इस अवसर पर जिंदल स्टेनलेस द्वारा संरक्षित पार्कों में कुल 400 पौधे लगाए गए। लगाए पौधों में आज़ादिरैक्टा इंडिका, महागोनी, बेलपेत्रा, कंफोर, सेनना सियामिया, थेवेटिया, हैमिलिया पेंटेंस और नीरियम ओलियेंडर जैसी विभिन्न प्रजातियां शामिल थीं। इस मौके पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष और यूनिट हेड, जिंदल स्टेनलेस हिसार विजय कुमार बिंदलिश ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि यह पौधरोपण अभियान हमारी चेयरपर्सन एमेरिटस सवित्री जिंदल को सम्मानित करने के लिए एक कदम है, जो सततता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

उनके 75वें जन्मदिन के इस विशेष अवसर पर, हम उन्हें निरंतर स्वस्थ और सफल जीवन की शुभकामनाएं देते हैं। जिंदल स्टेनलेस पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखते हुए सतत पहलों का समर्थन करता है। यह पौधेरोपण कार्यक्रम कंपनी के सामुदायिक और पर्यावरण के प्रति सकारात्मक योगदान की निरंतर प्रयासों को याद दिलाता है।

आमजन के लिए सीएससी का उद्घाटन

हिसार। जिंदल समूह की चेयरपर्सन एवं विधायक सावित्री जिंदल के जन्मदिन को शहरवासियों उत्साह के साथ मनाया। उनके समर्थकों ने जन्मदिन पर मिठाइयां बांटीं और केक काटा। सावित्री जिंदल के सम्मान में उनके व्यक्तित्व पर आधारित कविताएं पढ़ीं। मेधावी वशिष्ठ ने नरेश शर्मा द्वारा रचित कविता का गायन किया तो पंडाल तालियों से गूंज उठा। लोगों ने उन्हें 'हिसार की माँ' के रूप में संबोधित किया और उनके दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना की। इस अवसर पर, हिसार के लोगों की सहायता के लिए एक सीएससी (कॉमन सर्विस सेंटर) का उद्घाटन किया गया। यह केंद्र लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने और उचित तरीके से फॉर्म भरने में मदद करेगा। इसके अतिरिक्त, विभिन्न अनाथ आश्रमों और मोक्ष आश्रमों में भोजन वितरित किया गया।

सुखदा मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल ने गुजवि में लगाया मेडिकल कैंप

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। चिकित्सा शिविर के मौके पर उपस्थित कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई, सुखदा अस्पताल के मुख्य निदेशक डॉ. अमित मेहता व अन्य। *फोटो: हरिभूमि*

गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय के हेल्थ सेंटर में सुखदा मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल दिल्ली रोड के सौजन्य से एक मल्टीस्पेशलिस्ट कैंप आयोजित किया गया। इसमें अस्पताल के विभिन्न चिकित्सकों ने अपनी चिकित्सकीय सेवाएं प्रदान की। कैंप को शुभारंभ गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने एवं सुखदा मल्टीस्पेशिलिटी अस्पताल के मुख्य निदेशक डॉ..अमित मेहता ने किया। फिजिशियन डॉ.हेमंत दहिया, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. अंकुर कामरा, जनरल सर्जन डॉ.दीपम दास, कान, नाक व गला रोग विशेषज्ञ डॉ. दीप्ति सिंह, प्रसूति एवं महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. निधि मेहता, हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ डॉ.पंकज शर्मा आदि ने विभिन्न जांच सेवाएं दी। अस्पताल के मुख्य निदेशक डॉ अमित मेहता एवं वंश मेहता ने बताया कि सुखदा अस्पताल विवि के साथ पहले भी इस तरह के कैंप आयोजित करता रहता है।

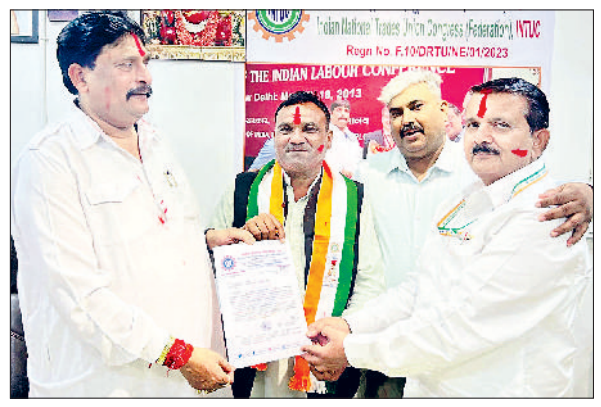

दारा सिंह वर्मा प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त

हिसार। वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं जिले के गांव मीरपुर निवासी दारा सिंह वर्मा को भारतीय राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक) का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इंटक के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामीनाथ जायसवाल के निर्देशानुसार राष्ट्रीय महासचिव डॉ. हुशिला प्रसाद ने उन्हें नियुक्ति पत्र सौंपा। कांग्रेस नेता दारा सिंह वर्मा पिछले लंबे समय से कांग्रेस की राजनीति व समाजसेवा में सक्रिय है। युवा कांग्रेस सहित कांग्रेस में अनेक पदों पर उन्होंने काम किया और पार्टी की नीतियों व कार्यक्रमों को सक्रियता से आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया है। पार्टी के प्रति उनकी निष्ठा व मेहनत को देखते हुए ही पार्टी ने उन्हें इंटक का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया है।

बिना लाइसेंसी पिस्तोल के साथ युवक गिरफ्तार

नारनौंद। स्पेशल स्टाफ ने थाना नारनौंद एरिया में गश्त के दौरान एक युवक को बिना लाइसेंसी पिस्तोल के साथ गिरफ्तार किया। आरोपित युवक की पहचान ढाणी चदरपुल निवासी कृष्ण के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपित को अदालत में पेश कर दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया है। रिमांड के दौरान आरोपी से पूछताछ की जाएगी कि वह हथियार कहां से लेकर आया था। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि एक युवक हरे रंग की टी-शर्ट और सफेद लोअर पहने हुए थुराना से पेटवाड़ जाने वाले रास्ते पर पानू सर्विस स्टेशन के पास किसी वाहन का इंतजार कर रहा है। उसके पास अवैध हथियार होने की आशंका थी। पुलिस वाहन को आता देख एक युवक तेज कदमों से पेटवाड़ की ओर बढ़ने लगा। पुलिस ने घेराबंदी कर उसे पकड़ लिया। उसने अपना नाम ढाणी चादरपुल निवासी कृष्ण बताया।

300 लीटर लाहन मामले में दूसरा आरोपी गिरफ्तार

हांसी। थाना नारनौंद पुलिस ने 300 लीटर लाहन मामले में दूसरी महिला आरोपी राजथल निवासी बीरमती को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार कुछ दिन पहले थाना नारनौंद पुलिस ने दौराने गश्त पड़ताल सुचना मिली थी कि गांव राजथल में भारी मात्रा में लाहन रखा हुए है। सूचना के आधार पर पुलिस ने गांव राजथल पहुंची तो पुलिस टीम को आता देखकर आरोपी 300 लीटर लाहन को मौके पर छोड़कर भागने लगे तो पुलिस ने पीछा कर एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था लेकिन महिला आरोपी मौके से भागने में कामयाब हो गई थी। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपी को काबू कर लिया।

कोथ कलां गांव में बंद मकान के ताले तोड़कर चांदी के गहने चोरी

- थाना नारनौंद में केस दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू की

हरिभूमि न्यूज ⏭नारनौंद

गांव कोथ कलां के एक बंद मकान को ताले तोड़कर चांदी के गहने व टीवी चोरी होने का मामला सामने आया है। मकान का मालिक अलवर में रहता है। जिस समय घर में चोरी की वारदात हुई उस समय घर पर कोई नहीं था।

पुलिस को दी शिकायत में धर्मबीर ने बताया वह गांव कोथ कला का रहने वाला है। उसका बड़ा बेटा नरेश शादीशुदा है और अलवर में रहता है। वह हीरो कंपनी में काम करता है। धर्मबीर ही उसके मकान की देखरेख करता है। सोमवार को जब धर्मबीर मकान देखने गया तो घर के ताले टूटे हुए मिले। अंदर जाकर देखा तो घर का सारा सामान बिखरा पड़ा था। उसने तुरंत नरेश को फोन कर जानकारी दी।

नरेश ने बताया कि घर में एक एलईडी टीवी और चांदी के गहने रखे थे। इनमें 50 ग्राम का चांदी का सिक्का और छह जोड़ी चांदी की चुटकियां शामिल थीं। धर्मबीर ने घर की तलाशी ली तो ये सामान गायब मिला। किसी अज्ञात चोर ने चोरी को अंजाम दिया है। धर्मबीर ने खुद अपने स्तर पर सामान की तलाश की लेकिन कुछ पता नहीं चला। इसके बाद मिर्चपुर पुलिस चौकी में शिकायत दी। थाना नारनौंद में केस दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

परिवहन समस्याओं को लेकर सौंपा ज्ञापन

- एक सप्ताह में समाधान न होने पर बड़े आंदोलन की चेतावनी

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। रोडवेज अधिकारी को ज्ञापन देते एसएफआई हिसार इकाई के नेता व कार्यकर्ता। *फोटो: हरिभूमि*

भारतीय छात्र संघ (एसएफआई) की हिसार इकाई ने हरियाणा राज्य परिवहन निगम के महाप्रबंधक के नाम रोडवेज अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर छात्रों की परिवहन संबंधी समस्याओं के समाधान की मांग की। एसएफआई के पदाधिकारियों ने बताया कि पिछले काफी समय से दूर-दराज से आने वाले छात्र-छात्राओं को बसों की कमी और असुविधाओं के कारण भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। एसएफआई ने ज्ञापन में जिन मांगों को उठाया, उनमें राजकीय महाविद्यालय हिसार में बनाए गए बस स्टॉप पर सभी बसों का नियमित रूप से रुकना सुनिश्चित करने, बस स्टेंड से कॉलेज के लिए विशेष बस सेवा शुरू करने, ग्रामीण क्षेत्रों से शहर के लिए विशेष रूप से छात्राओं के लिए सुबह और शाम को बसों की संख्या बढ़ाने, सिटी बसों में विद्यार्थियों के लिए बस पास लागू करने अथवा अधिकतम पांच रुपये किराया निर्धारित करने की मांग की गई है। एसएफआई ने चेतावनी दी कि यदि एक सप्ताह के भीतर इन मांगों पर उचित कार्रवाई नहीं की गई तो संगठन हिसार में बड़े स्तर पर छात्र आंदोलन खड़ा करेगा। इस दौरान एसएफआई के जिला प्रधान मोहित शर्मा, जिला सचिव सुखदेव बूरा, राजकीय महाविद्यालय इकाई के सचिव निखिल, रोहित घणघस, राहुल, नवीन, अंकित, भूपेश समेत कई अन्य छात्र मौजूद रहे।

नौजवान सभा के राज्य सम्मेलन में उठाए जाएंगे युवाओं से जुड़े मुद्दे : जितेन्द्र बूरा

- शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, बेहतर खेल सुविधाओं पर होगी चर्चा

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। बातचीत करते जनवादी नौजवान सभा के नेतागण। *फोटो: हरिभूमि*

भारत की जनवादी नौजवान सभा के जिला सचिव जितेन्द्र बूरा ने कहा है कि 22 व 23 मार्च को हिसार की जाट धर्मशाला में आयोजित होने वाले वाले डीवाईएफआई के 16वें राज्य सम्मेलन की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। सम्मेलन में युवाओं से जुड़े मुद्दे उठाकर उनके समाधान की मांग की जाएगी। जितेन्द्र बूरा गुरुवार जवाहर स्थित स्थित सूबेसिंह स्मारक भवन में बातचीत कर रहे थे। इससे पूर्व हुई सभा की बैठक की अध्यक्षता सम्मेलन स्वागत समिति के अध्यक्ष व नौजवान सभा के जिला अध्यक्ष पकंज बगला ने की। जिला सचिव जितेन्द्र व राज्य उपप्रधान मुकेश दुर्जनपुर ने कहा कि राज्य सम्मेलन में युवाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, बेहतर खेल सुविधाओं एवं युवाओं में बढ़ते नशे के खिलाफ जैसे मुद्दों को उठाया जाएगा जिसमें राज्यभर से सैंकड़ों प्रतिनिधि अपनी भागीदारी करेंगे। इसके अलावा तीन साल के दौरान हुई गतिविधियां व किए हुए कार्यों की रिपोर्ट पेश की जाएगी जिसमें मेंबरशिप के आधार पर चुने गए डेलिगेट ही बहस में हिस्सा ले सकेंगे। युवा सम्मेलन पर 22 मार्च को खुले अधिवेशन का आयोजन होगा जिसको सम्बोधित करने के लिए डीवाईएफआई के आल इंडिया अध्यक्ष ए.ए. रहीम एवं राज्यसभा सांसद तथा डीवाईएफआई के महासचिव हिमाघ्नराज भट्टाचार्य मुख्य वक्ता होंगे। इस मौके पर जिलाध्यक्ष पकंज बगला, जिला कोषाध्यक्ष अशोक बूरा, सुखदेव, सागर, छात्र नेता भूपेश सोनी, निखिल राजली आदि भी उपस्थित रहे।

जल संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। जल संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करते स्वयंसेवक।

फतेहचन्द महिला महाविद्यालय में चल रहे एनएसएस के सात दिवसीय शिविर के दूसरे दिन स्वयंसेविकाओं ने एनएनएस द्वारा गोद लिए गए गांव कैमरी में जागरूकता अभियान चलाया गया। प्राचार्या डॉ. अनीता सहरावत ने बताया कि अभियान के तहत जल संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण पर ग्रामीण व क्षेत्रवासियों को जागरूक किया।

साथ ही ग्रामीण युवाओं एवं बच्चों को मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग से होने वाली हानियों से भी अवगत कराया। इसी के साथ छात्राओं ने डीएन कॉलेज रोड़, अग्रवाल कॉलोनी एवं भामाशाह नगर में भी जागरूकता रैली निकाली। प्राचार्या डॉ. सहरावत ने बताया कि इसी श्रृंखला में छात्राओं को वृद्धाश्रम भी ले जाया गया। छात्राओं ने वहाँ रहने वाले बुजुर्गों से बातचीत की एवं उनके अनुभवों को भी सुना।

मंडी आदमपुर। सिलाई शिक्षा केंद्र का शुभारंभ करते अतिथिगण। *फोटो: हरिभूमि*

समाजसेवियों ने सिलाई शिक्षा सेंटर का किया शुभारंभ

मंडी आदमपुर। समाजसेवी संस्था मानव कलयाण सेवा ट्रस्ट द्वारा हाउसिंग बोर्ड स्थित संत नामदेव मंदिर प्रांगण में महिलाओं के लिए निशुल्क सिलाई शिक्षा सेंटर का शुभारंभ व्यापार मंडल, सचिव कमल बंसल तथा सचिव सहसचिव अजीत जाखड तथा नामदेव समाज के प्रधान गोलू राम मिस्त्री ने संयुक्त रूप से किया। इस मौके पर कमल बंसल ने ट्रस्ट के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि हमें भी समाज सेवा के कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग लेना चाहिए तथा हर जरूरतमंद को यथासंभव मदद करनी चाहिए। इस मौके पर प्रधान विनोद खन्ना, मोतीलाल गोयल, संरक्षक सुभाष खावड़ा,सुभाष मितल, हीरालाल शर्मा, जनार्दन शर्मा, संदीप जैन, संदीप जुल्हानिया, पवन बंसल, रमेश, गुलशन, रोशन भादू, शकुतला, कृष्णा आदि उपस्थित रहे।

'डेटा एनालिटिक्स विथ पायथनः अनलॉकिंग द पावर ऑफ डेटा' विषय पर कार्यशाला शुरू

डिजिटल युग में प्रमुख क्षेत्र बनकर उभरा डेटा विश्लेषण

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। डेटा विश्लेषण पर कार्यशाला का उद्घाटन करते कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई। *फोटो: हरिभूमि*

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि डेटा विश्लेषण उद्योगों के लिए 'फ्यूल' का काम करता है। विकसित भारत @2047 के उद्देश्य को पूरा करने में गुणवत्तापूर्ण डेटा विश्लेषण की अहम भूमिका रहेगी। वर्तमान डिजिटल युग में डेटा विश्लेषण स्वास्थ्य सेवाएं, वित्त, वाणिज्य, उत्पादन तथा प्रबंधक आदि सभी क्षेत्रों में प्रमुख क्षेत्र बनकर उभरा है। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई गुरुवार को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड डेटा साइंस विभाग के सौजन्य से 'डेटा एनालिटिक्स विथ पायथनः अनलॉकिंग द पावर ऑफ डेटा' विषय पर शुरु हुई पांच दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि गूगल, अमेजॉन, माइक्रोसॉफ्ट, टेसला आदि दुनिया की सर्वाधिक सफल कंपनियों ने डेटा विश्लेषण की अपनी महारथ के आधार पर ही यह मुकाम हासिल किया है। डेटा विश्लेषण से उपभोक्ता के व्यवहार, भविष्य की चुनौतियों तथा व्यापार संबंधी निर्णयों को समझने में मदद मिलती है। भारत ने भी डेटा विश्लेषण की महत्ता को समझ लिया है।

कार्यशाला के बारे में विस्तृत जानकारी दी

विश्वविद्यालय के चौधरी रणबीर सिंह सभागार में हुई इस कार्यशाला में डीन फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एंड डेटा साइंस प्रो. संदीप आर्य विशिष्ट अतिथि थे। अध्यक्षता कार्यशाला के संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. धर्मेंद्र कुमार ने की। विशिष्ट अतिथि प्रो. संदीप आर्य ने अपने स्वागत सम्बोधन में कहा कि कार्यशाला का विषय एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। सही डेटा विश्लेषण उद्योगों के लिए एक बड़ी पूंजी है, जो सही निर्णय लेने में मदद करती है। संयोजक प्रो. धमेन्द्र कुमार ने बताया कि सैद्धांतिक ज्ञान व औद्योगिक मांग की दूरी को पूरा करने में यह कार्यशाला एक ब्रिज का काम करेगी। सह-संयोजक डॉ. अमनदीप ने कार्यशाला के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कार्यशाला के सत्रों की सारणी तथा उद्देश्य के बारे में बताया जबकि सह-संयोजक डॉ. सुनील ने धन्यवाद किया।